ISSN No -2277 - 2715

शोध संकल्प

अभियांत्रिकी, कला, संस्कृति, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध प्रत्रिका

अंक – 13, वर्ष – 03, फरवरी -- अप्रैल 2015

अनुक्रम


| | | | |
|---|---|---|---|
| 01 | Review of Employment Generation Programme in India | Shitesh Jain<br>Dr. Sanju Pandey | 01 |
| 02 | The God of Small Things : A Note on Style and Structure | Dr. Ruby Milhoutra | 09 |
| 03 | Salman Rushdie's Grimus : "Seeking meaning of Life Through magic Realism | Smt. Ruchi Dubey | 13 |
| 04 | Study of Diversity of Microbes during Celebration of Rajyotsava, 2007 | Dr. Preeti Tiwari | 20 |
| 05 | Vijay Tendulkar's Ghashiram Kotwal : Parallel Running between Antiquity and Contemporaneity | Dr. Priya Bajaj | 23 |
| 06 | New Trends in English Language Teaching and Learning | Dr. Susan Udai | 27 |
| 07 | Studies of Water Quality in "Navatalab" Masturi (C.G.) | Bhuwan Singh Raj<br>Rajesh Kumar Rai<br>Shriti Shomvanshi | 29 |
| 08 | Transmitting Moral Education Through Education | Dr. P.K.Pandey<br>Shitesh Jain | 33 |
| 09 | Communicative Aesthetics in Under Graduate English Language Class Room | Dr. U.N.Kurrey | 36 |
| 10 | Climate Change and Its Impact | Dr. Sanju Pandey<br>Dr. P.K.Pandey | 39 |
| 11 | Studies on the Effect of Mercuric Chroride on the Reproductive Physiology in a fresh water teleost, Gambusia Affinis | Bhuwan Singh Raj<br>Rajesh Kumar Rai<br>Shriti Shomvanshi | 46 |
| 12 | Biodiversity of Bacterial flora isolated from Rhizospheric Soil of Korea District of C.G. | Swati Rose Toppo<br>Dr. Preeti Tiwari | 50 |
| 13 | Initiative in Communicative English Teaching | Dr. U.N.Kurrey | 54 |
| 14 | भारत में वित्तीय समावेशन | डॉ. सन्जू पाण्डेय<br>डॉ. प्रवीण पाण्डेय | 57 |
| 15 | मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिकता बोध | डॉ. देवेन्द्र शुक्ल | 61 |
| 16 | ग्रामीण नेतृत्व एक अध्ययन नवनिर्वाचित ग्राम संरपंचों के विशेष संदर्भ में | डॉ. एम.के.पाण्डेय<br>डॉ. प्रवीण पाण्डेय | 63 |
| 17 | भूमण्डलीकरण एवं भारत में गरीबी का गंभीर मसला | डॉ. किरण एस.एक्का<br>डॉ. रंजना गुप्ता | 67 |
| 18 | इलेक्ट्रानिक मीडिया और हिन्दी | डॉ. देवेन्द्र शुक्ल | 72 |
| 19 | कबीर के काव्य में दाम्पत्य प्रेम | डॉ. हेमंत पाल घृतलहरे | 74 |
| 20 | छत्तीसगढ़ की वाचिक परंम्परा : जनजातियों के विशेष संदर्भ में | डॉ. देवेन्द्र शुक्ल | 81 |

ISSN No -2277 - 2715

शोध संकल्प
अभियांत्रिकी, कला, संस्कृति, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध पत्रिका
अंक – 13, वर्ष – 03, फरवरी – अप्रैल 2015

अनुक्रम


| | | | |
|---|---|---|---|
| 21 | वन्य प्राणी अभ्यारण्य गोमर्डा में औषधीय पौधों का अध्ययन | तोमन सिंह<br>लोकेश्वर पटेल | 84 |
| 22 | समावेशी विकास : समस्याएं तथा नीतियॉं | श्रीमति उमानंदिनी जायसवाल | 89 |
| 23 | हिन्दी रंगमंच का भविष्य | डॉ. देवेन्द्र शुक्ल | 95 |
| 24 | छत्तीसगढ़ के खनिज संसाधनों की उपलब्धता एवं उपयोग | डॉ. शरद कुमार देवांगन | 96 |
| 25 | सामाजिक कुरीतियॉं : एक अभिशाप | श्रीमति विनय प्रभा मिन्ज | 103 |
| 26 | महिला सशक्तिकरण हेतु : केन्द्र सरकार के आर्थिक प्रयास | डॉ. देवेन्द्र शुक्ल | 105 |

ISSN No -2277 - 2715

# कबीर के काव्य में दाम्पत्य प्रेम

डॉ. हेमंत पाल घृतलहरे
विभागाध्यक्ष, हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय, हसौद (छ.ग.)

"आज बरसों बाद पीतम मिल गये जीवन डगर में
मष्त मनोरथ के सुमन ये खिल गये जीवन डगर में
वे धुएँ के तूल से छाये हुए थे सजन बादल,
झर रहा था गगन के हिय से मगन यौवन–लगन–जल
उन दुःखद रिमझिम–क्षणों में
शून्य पंकित पथ–कणों में
हार–से, मनुहार–से पिय मिल गये जीवन डगर में।
भरगया आकण्ठ हिय–तल, ललक उमड़ा नयन का जल
कर उठा नर्तन ह्दय का कमल विकसित मुदित पल–पल
उस हिरते नीम नीचे
झुक दृगों ने चरण सींचे
नेह–रस–वश अधर उनके हिल गये जीवन डगर में
आज बरसों बाद पीतम मिल गये जीवन डगर में।।" (1)

पिय का मिलना और प्रिय का मिलना दोनों ही अत्यंत सुखद है। और यदि पिय और प्रिय एक ही हो तब तो बात ही क्या?

प्रकृति ने समूचे सृष्टि में द्वैत तत्व बरकरार रखा है। ऐसा लगता है कि एक ही चीज के दो भाग है जो पुनर्मिलन के लिये निरंतर प्रयासरत है। जैसे – स्त्री और पुरूष अथवा नर और मादा। सभी जीव–जन्तु, पशु–पक्षियों, सूक्ष्मजीवों में भी नर और मादा शक्ति, चुम्बक में उत्तर और दक्षिण ध्रुव, अणु–परमाणु में ऋणात्मक और धनात्मक आवेश सदा पास आने और एक होने की कोशिश करते पाये जाते हैं। ऐसा लगता है कि वो अधूरे एक दूसरे को पाकर पूर्ण हो जाना चाहते हैं।

इस अधूरेपन को भरने की कोशिश का नाम ही जिंदगी है। यदि यह अधूरापन न खले तो शायद जिंदगी में इतनी रौनक, इतनी खोजबीन ही न रहे। सारे उमंग, तरंग, जोश, उत्साह के पीछे ये काम भावना ही है। अन्य जीव–जन्तु और पशु–पक्षियों के लिये यह मैथुन ek= gSij eku0 lekt bls'nkaR; la[k [2] की मर्यादा में बांधता है। साहित्य उसे 'प्रेम' कहता है, भाषा विज्ञानी 'काम' कहता है, काव्य शास्त्र उसे 'रति' कहते है और श्रृंगार रस में समावेशित करते हुए उसे 'रसराज' निरूपित कर देते है। जो भी हो पर यह 'काम' जीवन का केन्द्र है।

वात्स्यायन ने काम की व्याख्या करते हुए कहा कि – काम ही प्रेम है। काम ही सुख है और काम ही दाम्पत्य आनंद की प्राप्ति एवं संतुष्टि है। [3]

जड़–चेतन भी इसमें सुख की अनुभूति करते हैं तब भला मानव कैसे इस प्रेम से अछूता रह सकता है चाहे वह संत हो या असंत सन्यासी हो या गष्हस्थ काम सबको आकर्षिक करता है। भक्ति शास्त्र के पॉच तत्वों में एक तत्व 'माधुर्य' को माना जाता है और सर्वस्व समर्पण की दर्ष्टि से कान्ता सम्मत मधुर रस की साधना उत्तम मानी गयी है। [4]

मधुसूदन सरस्वती मधुर भाव की भक्ति को श्रृंगार भक्ति शब्द से अभिप्रेत करते हुए कहते हैं – "जिस भाव द्वारा हमारी अंतरात्मा स्निग्ध, कोमल एवं निर्मल हो तथा जिस पर ममत्व की छाव भी लगी हो उसी के गाढे रूप को हम प्रेम की संज्ञा देते हैं।" [5] इस प्रकार भक्ति में भी दाम्पत्य भाव को स्वीकारा गया है।

कबीर भारतीय धर्मदर्शन एवं साधना के जगत में अपना अमिट, अविस्मरणीय अनूठा स्थान रखते है। ऐसा संवेदनशील एवं व्यावहारिक, परिपक्व व्यक्तित्व वाला व्यक्ति इसकी अनदेखी कैसे कर सकता था। बल्कि कबीर तो 'काम' को भी 'राम' के लिये मार्ग (साधना) बना लेने की क्षमता रखते हैं। कबीर कहते है –

"काम मिलावे राम कूं जे कोई जांणे राखि।
कबीर बिचारा क्या करै, जे सुखदेव बोलै साखि।" [6]

अर्थात 'काम' भी 'राम' के लिये मार्ग बन सकता है। यह बहुत बड़ी उद्घोषणा है।

प्रायः हम यही जानते है कि कबीर ने स्त्री को 'माया' कहा और 'कनक–कामिनी' से दूर रहने की सलाह दी है –

"कनक तजो कामिनी तजो, तजो विषय को संग।

अधरे पर झूलत रहे, याही के परसंग।।" (7)

कबीर की दृष्टि में 'माया' डांकिनी है पापिनी है, मोहिनी है, वेश्या है, सांपिनी है और इससे बचना चाहिये अन्यथा यह हमें खा जाएगी –

"कबीर माया डांकिनी, खाया सब संसार।

खाइ न सके कबीर को, जाके राम अधारे।।" (8)

इससे केवल कबीर (संत) ही बच पाएंगे जो परमात्मा पर आश्रित है, माया पर नहीं।

माया और कनक कामिनी विरोधी वक्तव्य देने से कबीर स्त्री विरोधी नहीं हो जाते, यह बात ध्यान रखनी चाहिये। भक्त, साधक, सन्यासी को साधना के समय मन के विचलित होने से बचाने के लिये दिया गया संदेश केवल पुरूष के लिये नहीं है, स्त्री के लिये भी है। यदि पुरूष के लिये स्त्री माया है तो स्त्री के लिये पुरूष भी माया है। कबीर का वक्तव्य चित्त की एकाग्रता और शांति के समय चित्त की चंचलता में नहीं पड़ने के लिये है। यह स्त्री और पुरूष दोनों के लिये है। इसे भाषा का अधूरापन कह सकते है।

क्योंकि दूसरी तरफ कबीर सती और पतिव्रता स्त्री की प्रशंसा करते नहीं थकते– "सती भई है सन्त कूं, सरीर कीन्ही सान।

बाट बटाऊ चलि गये, हम तुम रहै निदान।।" (9)

और देखिये –

"ऐसी भॉति जो सती है सो निज मुक्ति परमान।

मुक्ति देत संसार को, सोइ सती तूं जान।।" (10)

पतिव्रता स्त्री को कबीर सर्वोच्च स्थान देते है –

"पतिबरता मैली भली, काली कुचल कुरूप।

पतिबरता के रूप पर बारौं कोटि सरूप।।" (11)

इससे यह सिद्ध होता है कि कबीर को स्त्री विरोधी कहना अनुचित है। कबीर व्यभिचार और व्यभिचारी का विरोध कर रहे है। कबीर कहते है कि एकनिष्ठ प्रेम पर हो व्यक्ति रोझता है – विभिचारिन विभिचार में आठ पहर हुशियार कहैं कबीर पतिवरता विन, क्यों रीझे भरतारे" (12)

कबीर समाज में स्वस्थ दाम्पत्य जीवन चाहते हैं। मर्यादित, संयमित, एकनिष्ठ एवं प्रेमपूर्ण दाम्पत्य चाहते है। वे पर स्त्री गमन और पर पुरूष गमन को वर्जित कर रहे हैं। आदर्श गष्हस्थ धर्म का सूत्र है एकनिष्ठ प्रेम। कबीर इसी पर जोर दे रहे है। वे कहते हैं पराई स्त्री और पराये पुरूष के प्रति कामासक्त रहने वाले लोग भवसागर में फंसे रहते है और उनका जीवन नरक के समान हो जाता है –

"पर नारी को राचणों औगुण है गुण नाहिं।

सुर समंद में मंछला, केता बहि बहि जाहि।।"

यहॉ पर प्रहार पुरूष पर किया गया है।

कबीर लोक व्यवहार में सिद्धहस्त कवि हैं। वे संत हैं, भक्त हैं, मार्गदर्शक है, समाज सुधारक है कवि है, साधक है उनके अनेक रूप है। फिर भी वे एक है अखण्ड हैं। उन्होंने अपनी आत्मा को पत्नि और परमात्मा को पति माना है। उनके भक्त, साधक सन्यासी सभी गष्हस्थ (प्रायः) थे इसलिये गष्हस्थ के गहरे प्रतीक का गहरा प्रयोग उन्होंने किया है।

कबीर की दृष्टि में आत्माऍ (पत्नियॉ) अपने पति (परमात्मा) से बिछुड़कर विरह पीड़ा में तड़प रही है और उनके मिलन के लिये व्याकुल है। यही मिलन इस जन्म का जीवन लक्ष्य (टारगेट मिशन) है।

कबीर साधकों (आत्माओं) को 'दुलहिन' की संज्ञा से संबोधित करते हुए कहते है –

"दुलहिन गावहु मंगलाचार।

हमरे घर आएहु राम भरतार।।" (14)

आज हमारे प्रियतम (पति) परमात्मा हमारे घर आ रहे हैं इसलिये आनंद मंगल गाओ। यह खुशी ऐसी है कि जैसे कोई सुहागिन स्त्री अपने परदेस गये पति के घर वापस लौटने पर रोमांचित हो उठती है।

पत्नी अपने पति के प्रेम को बॉटना (शेयर करना) नहीं चाहती। यही भाव कबीर की इन पंक्तियों में दिखाई देता है –

"नैन अंतर आवतूँ, नैन झंपि झंपि लेऊँ।

ना मैं देखूँ और को, ना तोहि देखन देऊँ।।" (15)

यहाँ पर कबीर एकान्तिक दाम्पत्य प्रेम का संकेत दे रहे हैं। जब पति और पत्नी एक दूसरे को जमाने से बचाकर अपने आंखों में, ह्दय में समा लेना चाहते है और एक दूसरे में समा जाना चाहते हैं। फिर "गैर" को न दीखते हैं और न देखते हैं।

कबीर के इस दाम्पत्य प्रेम में लोकलाज एवं सामाजिक मर्यादा का भी ध्यान रखा गया है। यह प्रेम पाश्चात्य संस्कषति जैसा स्वच्छन्द और मनमाना न होकर गष्हस्थ की मर्यादा में बंधा समाज स्वीकष्त प्रेम है। कबीर ने प्रेमी जोड़े मर्यादा पार नहीं करते –

"मिलना कठिन है कैसे मिलौंगी, प्रिय जाय।

समुझि सोचि पग धरौ जतन से बार–बार डिग जाय।।" (16)

वे विरह में जलते है। संयम टूट–टूट जाता है। फिर भी विवेक (समझ) का साथ नहीं छोड़ते। विवेक सदा ही सत्पथ का पथ प्रदर्शक बनकर मार्ग से डिगने नहीं देता। दाम्पत्य प्रेम ऐसा ही विवेकपूर्ण होना चाहिये। कबीर कहते हैं –

"ऊँची गैल राह रपटीली पॉव नहीं ठहराय।

लोक लाज कुल की मर्यादा, देखत मन सकुचाय।।" (17)

कबीर के काव्य में शांत भाव की भक्ति, दास्य भाव की भक्ति, सख्य भाव की भक्ति, वात्सल्य भाव की भक्ति और दाम्पत्य भाव की भक्ति पाये जाते है जिनमें दाम्पत्य भाव की भक्ति का स्वर सर्वाधिक प्रबल है।

संसार के माया मोह में उलझे लोगों को कबीर कहते है –

"नारी को झांई परत, अन्धा होत भुजंग।

कबिरा तिनकी का दसा जो नित नारी के संग।।" (18)

लेकिन दूसरी ओर देखिये –

"नारी निन्दा न करो, नारी रतन की खान।

नारी से नर होत है, ध्रुव प्रहलाद समान।।" (19)

स्त्री की निंदा कबीर ने वर्जित की है। जहॉ दाम्पत्य है वहॉ स्त्री स्वीकृत है। पराई स्त्री का संग वर्जित है। उदाहरण –

"परनारी के राचनै, सीधा नरकै जाय।

तिनको जम छाड़ै नहीं, कोटिन करै उपाय।।" (20)

पर स्त्री (परपुरूष भी) का संग नरक में ले जाता है। यह आदर्श दाम्पत्य के लिये प्रेरक है। आज समाज में यौन हिंसा और तलाक के ज्यादातर प्रकरण ऐसे हैं जो पर स्त्री या परपुरूष से काम संबंधों के कारण ही हो रहे हैं। कबीर आध्यात्मिक संदेश के साथ–साथ गार्हस्थ संदेश भी दे रहे हैं। यदि उनकी बात मान ली जाये तो निश्चित ही समाज की अराजकता, अपराध, अशांति, पारिवारिक विखराव, यौद उन्माद एवं हीनताजन्य आत्म हत्याएँ रूक सकती है, और एक स्वस्थ समाज की रचना हो सकती है।

दाम्पत्य के पूर्व कबीर की सुंदरी अपने प्रियतम को ढूँढने निकल पड़ती है, यहॉ आत्मा परमात्मा का वर्णन अत्यंत लौकिक धरातल पर दिखाई पड़ता है –

"भीजै चुनरिया प्रेम रस–बूंदन

आरती साज के चली है सुहागिन

प्रिय अपने को ढूंढन।" (21)

जब प्रियतम मिल जाता है तब कबीर की सुन्दरी (आत्मा) अपने प्रिय (परमात्मा) से विवाह रचा लेती है। सामान्य नायिका की तरह नायक के साथ भॉवर (फेरे) लेकर दाम्पत्य बंधन में बंध जाती है फिर अपने तन, मन, यौवन को पति को समर्पित कर देना चाहती है –

"दुलहिनी गावहु मंगलचार।

हम घरि आए राजाराम भततार।

तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पंच तत्व बराती।

राम देव मोरे पाहुने आए, मैं जावन मदमाती।

सरीर सरोवर बेदी करिहौं, ब्रम्ह वेद अपारा।

राम देव संग भॉवर लेइहौं धनि धनि भाग हमारा।

सुर तैंतीसों कोटिक आए मुनिवर सहस अठासी।

कहै कबीर हम ब्याहि चले है पुरूख एक अविनासी।।" (22)

दुलहिन के रूप में ब्याह कर जाती हुई स्त्री के

रूप में स्वयं की गर्वोक्त स्वीकप्ति की झनक इन पंक्तियों में है। सामान्य लौकिक जीवन में स्त्री–पुरूष का विवाह होता है, यही से दाम्पत्य जीवन प्रारंभ होता है। भक्ति काव्य में भी दाम्पत्य का यह पुट सरस और अनायास अपने महत्व को प्रतिध्वनित कर रहा है। यह महिमा किसकी है? दाम्पत्य की? या कबीर की? कि भक्ति काव्य में भी लौकिक दाम्पत्य भाव अपना सीन बना सका।

कबीर इतने प्रतिभाशाली हैं कि वे पत्थर का उपयोग भी सीढ़ी की तरह कर सकते हैं और दाम्पत्य इतना महत्वपूर्ण है कि महल से लेकर मंदिर तक सहज प्रवेश कर जाता है। अतः यह कहना चाहिये कि यह दोनों की महिला है। कबीर 'पुरूष' है और दाम्पत्य (प्रेम) 'प्रकप्ति' है। प्रकप्ति और पुरूष से ही सप्ष्टि संचालित है। अतः यह स्वाभाविक ही है। चाहे लौकिक हो या अलौकिक, पर कबीर के काव्य में दाम्पत्य प्रेम का चित्रण है यह बात स्वतः प्रमाणित है।

विवाह के बाद स्त्री को मायके बिल्कुल अच्छा नहीं लगता वह पति के साथ ससुराल में खुश रहती है। वैसे ही परमात्मा से संबंध जुड़ जाने के बाद आत्मा संसार के प्रपंच में उलझे रहना नहीं चाहती वह अपने मूल घर (ससुराल) पति (परमात्मा) के पास लौट जाना चाहती है –

"नैररवा हम का नहीं भा वै

सॉई की नगरी परम अति सुन्दर

जहॉ कोई जाइ न आवै।" (23)

पत्नी रूपी जीवात्मा इतनी प्रसन्न है कि खुशी खुशी सबको बताती है –

"हरि मेरा पीव भाई, हरि मेरा पीव
हरि बिन रहि न सके, मेरा जीव

हरि मेरा पीव मै। हरि की बहुरिया

राम वडे मैं छुटक लहुरिया।" (24)

मैं राम (परमात्मा) की दुल्हन हूॅ यह स्वीकारोक्ति प्रेमपूर्ण स्वाभिमानी स्त्री की है।

विवाह उपरान्त पति और पत्नी एक सेज पर दाम्पत्य जीवन प्रारंभ करते हैं। यहॉ तन–मन सब एक हो जाते हैं। दोनों के बीच कोई दूरी नहीं रहती।

कबीर आत्मा और परमात्मा के सुहागरात का भी (अलौकिक) वर्णन लौकिक सहज प्रतीको से करते है –

"धनि पिय एकै संग बसेरा सेज एक पै मिलन दुहेरा।

धन्न सुहागिन जो पिय पावै, कहि कबीर फिर जनम न आवै।।" (25)

एक बार पिया से मिलना हो जाये तो फिर दुबारा आवागमन नहीं होता मोक्ष है।

इस मिलन की प्यास में ही तो तड़प–तड़प के जीवन व्यतीत हुआ जाता था। क्रौच सी तड़पती थी विरहिनी –

"अंबर कुंजा कुरलियॉ, गरजि भरे सब ताल

जिनथे गोविंद बीछुड़े, तिनका कौन हवाल।।" (26)

इस विर की पीड़ा में अनंत समय तक तड़पते हुए जीवात्मा 'मष्त्यु' तक मॉगने लगती है –

"कै बिरहिनी को मीच दै, कै आपा दिखलाय।

आठ पहर का दाझना, मो पै सहा न जाय।।" (27)

पत्नी की विरह पीड़ी को देखकर पति परदेस से वापस लौट आता है, उसी प्रकार विरह में जलती जीवात्मा पर परमात्मा को भी दया आ गई और स्वयं आकर उन्होंने विरहाग्नि को शांत किया है –

"विरहिनी जलती देख के , सांई आये धाय।

प्रेम बुंद सों छिरकि के , जलती लेय बुझाय।।" (28)

कबीर की नायिका प्रत्येक कार्य में पहल करती है। वह प्रिय के वियोग में जलती है। प्रिय को ढूंढती है। प्रिय से विवाह रचाती है। प्रिय के साथ समागम करती है। पति–पत्नी के अंतरंग क्षणों के लिये भी चतुर नायिका पहल करती है मानो वह दाम्पत्य में कुशल है। देखिये –

"ए अंखियॉ अलसानी, पिया हो सेज चलो।

खंभ पकरि पतंग अस डोलै, बोलै मधुरी बानी।

फूलन सेज बिछाइ जो राख्यौ, पिया बिना कुम्हलानी।

धीरे पॉव धरो पलंगा पर, जागत ननॅद–जिठानी।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, लोकलाज बिछलानी।।" (29)

सामान्य जीवन में जिस तरह दाम्पत्य प्रेम पुष्पित, पल्लवित होता है, बिल्कुल वैसा ही सटीक उदाहरण यहाँ कबीर ने .दया है। इससे उनकी संत दर्षष्टि (सिद्ध दर्षष्टि) का पता तो चलता ही है साथ ही कवि दर्षष्टि का भी पता चलता है।

कबीर के भक्ति काव्य में श्रंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर सजीव वर्णन है। इसमें प्रतीक भी है, बिम्ब भी है, दष्ष्टान्त भी।

प्रेम में वियोग का सुन्दर वर्णन देखिए –

"चकवी बिछुरी रैणि की, आइ मिली परभाति।

जे जन बिछुरे राम से, ते दिन मिले न राति।।" (30)

चकवा–चकवी का प्रेमी जोड़ा विख्यात है। इसकी उपमा दाम्पत्य का सुन्दर उदाहरण है।

दूसरी ओर श्रंगार करके दुलहन पिय के साथ जा रही है –

"मैं अपने साहब संग चली

हाथ में नरियल मुख बीड़ा मोतियन मॉग भरी।

लिल्ली घोड़ी जरद बछेड़ी, तापै चढ़ि के चली।।" (31)

कबीर विराट ह्दय के व्यक्ति है उनके वक्तव्य में उनकी निडरता और प्रखरता स्पष्ट है। भक्ति काव्य में भी दाम्पत्य संबंधो के ऐसे उदाहरण देखकर कबीर ने अपनी श्रेष्ठ काव्य कला का ही परिचय दिया है।

कबीर दाम्पत्य संबंधों को प्रेम की पराकाष्ठा तक ले जाते हैं। वे प्रेम के समर्थक है। वे केवल लौकिक प्रेम तक सीमित नहीं है। उनका प्रेम अलौकिक भी है, जिसे समझना जरूरी है कि आखिर प्रेम है क्या?

"प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीन्हे कोय।

आठ पहर भीना रहै, प्रेम कहावै सोय।।" (32)

यानी आठो पहर प्रेम विभोर रहें तब उसे प्रेम कहते हैं चाहे वह परमात्पा हो या जीवन साथी, स्वार्थवश कुछ क्षणों का प्रेम वासना मात्र है स्थिर और निःशर्त प्रेम हो।

आजकल तो प्रेम के नाम पर केवल धोखा नही है स्वाथपूर्ति, वासनापूर्ति को ही प्रेम का चोला पहनाया जा रहा है। ऐसे में कबीर की वाणी अति प्रासंगिक है –

"पपिहा तो पिव पिव करे निस दिन प्रेम पियास।

पंछी विरूद न छांड़ही क्यो छांड़े निज दास।।" (33)

ऐसा अटूट प्रेम और प्रेम का सातव्य यदि बना रहे तो दाम्पत्य तो मजबूत होगा ही, परमात्मा भी प्रेम प्रेम की ऐसी लगन, ऐसी धुन, ऐसी रटन लगी रहनी चाहिये कि व्यर्थ को स्थान ही न मिल सके। ऐसे प्रेम के बिना जीवन मुर्दा हो जाता है –

"जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।

जैसे खाल लुहार की, स्वांस लेत बिनु प्रान।।" (34)

ऐसा मष्त प्राय जीवन नहीं चाहिये। प्रेम से परिपूर्ण जीवन चाहिये। एक निष्ठ प्रेम से परिपूर्ण जीवन।

कबीर के दुल्हा (परमात्मा)–दुल्हन (जीवात्मा) के अटूट प्रेम की डोर जब एक बार जुड़ जाती है तो बारहों मास प्रेम विलास चलता रहता है। फिर कोई विरह, पीड़ा नही होती। आनंद ही आनंद होता है –

"हम वासी वा देश के, बारह मास विलास।

प्रेम झरै विगसै कमल, तेज पुंज परकास।।" (35)

चाहे वह लौकिक जगत हो या अलौकिक जगत, प्रेम की एकनिष्ठ साधना में सुख है, प्रकाश है, आनंद है, विकास है। कबीर की यह वाणी साधना की दर्षष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही। संसार के दाम्पत्य संबंधों को भी यदि इस दर्षष्टि से संचालित किया जये तो गष्हस्थ जीवन स्वर्ग हो जाएगा।

कबीर दाम्पत्य में काम को सहज स्वीकर्षति देते हैं पर काम को विवेकपूर्वक समझन की बात कहते है --

"काम काम सब कोई कहै, काम न चीन्है कोय।

जेती मन की कल्पना, काम कहावै सोय।।" (36)

अर्थात कामना ही काम है। अतः अपने विचारों में निरन्तर काम का चिन्तन करते हरने से कामना बलवती होगी कामुकता बढ़ेगी और व्यक्ति कामी हो जायेगा। कामी होगा तो और काम के लिये लाभ करेगा – लोभी हो जाएगा। काम के मार्ग में कोई बाधा आए तो – क्रोधी हो जाएगा। इस तरह काम जड़ है। दाम्पत्य में रहते हुए भी व्यक्ति को कामी नही होना चाहिये अन्यथा भक्ति नहीं होगी और व्यक्ति पथभ्रष्ट हो जाएगा –

"कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।

भक्ति करै कोइ सूरमा, जाति बरन कुल खोय।।" (37)

कबीर चाहते है कि व्यक्ति शाहरी हो सूरमा हो। वे काम के दास नहीं बल्कि स्वामी बने। आध्यात्मिक अर्थो में काम तो बाधा है ही दाम्पत्य जीवन (सांसारिक अर्थो) में भ काम का संयम आवश्यक है। आज समाज में 'कामी' बढ़ गये है, इसी कारण समाज की दुर्दशा हो रही है। ये कामी पुरूष व स्त्री दोनों हो सकते है। संयम एवं मर्यादापूर्ण दाम्पत्य प्रेम स्वस्थ समाज की रचना में सहायक हो सकता है। अतः अति 'काम' या 'कामुकता' की वर्जना होनी चाहिये।

आज के स्वच्छन्दतावादी, कामुक, यौन लिप्सा, के युग में कबीर का एकनिष्ठ प्रेम का संदेश अंधेरी कोठरी में दीपक जलाने के समान है। आज पत्निव्रत या पतिव्रता होकर ही इन समस्याओं से मुक्ति पायी जा सकती है। इसके लिये जरूरी है कि मन की चंचलता को शांत रखते हुए एकनिष्ठ होकर संतुष्टिपूर्वक जीवन जीया जाये। कबीर कहते हैं –

"एक चित होय न पिव मिलै, पतिवरता ना आवै।

चंचल मन चहुँ दिसि फिरै, पिय कहो कैसे पावै।।" (38)

इसलिये एकचित्त होकर एकनिष्ठ प्रेम करते हुए स्वस्थ दाम्पत्य जीवन में रहकर भक्ति करनी चाहिये। कबीर दाम्पत्य प्रतीकों से अध्यात्म का संदेश दे रहे हैं और अध्यात्म के माध्यम से सुखी गष्हस्थ की कुंजी भी बॉट रहें हैं। उनके संदेश को एकांगी देखने से मानव समाज को भयंकर क्षति हो सकती है। अतः उनके बहुआयामी संकेतो के बहुआयामी अर्थ लेने आवश्यक है। भारत में देह को हेय मानने की सार्वजनिक प्रवष्त्ति है जिससे हम अर्थ को संकीर्ण और विकष्त कर लेते है।

मैथुन और यौनिक बिम्बों के विभिन्न रूप भारतीय इतिहास और पुराण के अभिन्न अंग है। आत्मा–परमात्मा के अन्तर्सम्बन्धों पर सबसे अधिक गायन मिलने वाले आदि, उत्तर–मध्यकाल की रचनाओं में भी शारीरिक प्रकरण मिलते है। इनमें देह की सौन्दर्य परक चर्चा मिलती है। दूसरे अर्थ में, कवियों में अधिकाधिक, आत्मा के महत्व को मानते हुए भी देह का अस्तित्व, कम–से–कम मनुष्य रूप में स्वीकार करते थे।" (39) कबीर का काव्य इस देह–विमर्श की परिधि और परिभाषा में तो शामिल नहीं होता। परन्तु उनकी लौकिक व्यंजना को नकार देना साहित्य के साथ एकदम अन्याय होगा। संदेश भले ही अलौकिक (परमात्मा) प्रेम का है, पर माध्याम तो लौकिक दाम्पत्य प्रेम ही है। उदाहरण देखिए –

"वे दिन कब आवेंगे माइ।

जा कारनि हम देह धरी है, मिलिबौ अंगि नगाइ।" (40)

इसमें लौकिक कामना भी है। आगे देखिये –

"बालम आव हमारे गेह रे।

तुम बिन दुखिया देह रे।

सबको कहै तुम्हारी नारी, मोको इहै अंदेह रे।

एकमेक हवै सोज न सोवै, तब लग कैसा नेह रे।।" (41)

इन पंक्तियों मे प्रतीक और अभिव्यंजना दैहिक प्रेम का ही है। कबीर ने दैहिक, लौकिक सामान्य प्रतीकों से अलौकिक को अभिव्यक्ति दी है। "कबीर के प्रेम में कामभावना रामभावना–समाजभावना के बीच सतत निरंतरता का संबंध है।" (42) जरूरत है हमें निष्पक्ष दष्टि से देखने, समझने और आत्मसात करने की, जिससे हमारा जीवन सार्थक हो सके।

कबीर ने दाम्पत्य प्रतीकों का उपयोग अपने गूढ संदेशों को सहजता से जनमानस के भीतर तक पहुँचाने के लिये किया है। इसमें उच्छंखलता, देह–विमर्श, अश्लीलता और मनोरंजन का उद्देश्य निहित नहीं है। यह कवि की काव्यकला और शैली वैशिष्ट्य है कि वह काम को भी राम के लिये सीढ़ी बना सके।

कबीर के काव्य में चित्रित दाम्पत्य प्रेम एवं काम भावना लौकिक धरातल पर कुतूहल, आकर्षक जिज्ञासा उत्पन्न कर मन को रंजित कर सांसारिक प्रेरणा दे जाती है तो अध्यात्म के मार्ग को सरल, सहज, सुगम और रसपूर्ण बनाती हुई सिद्धावस्था के अनुभव तक पहुँचा देती है।

## संदर्भ सूची


1 ओशो, प्रेम पंथ ऐसो कठिन, (संपा.–स्वामी योग प्रताप भारती, 1998, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली पष्ठ – 115

2 अरविंद कुमार, समांतर कोश हिंदी थिसारस, अनुक्रम खंड, छठी आवष्त्ति 2011, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली पष्ठ – 1089

3 टोकी, डा।. राजेन्द्र, कबीर : दष्टि–प्रतिदष्टि, विमला बुक्त दिल्ली, 2012 में संकलित – डॉ.

आशा, अनेजा का आलेख–कबीर काव्य में माधुर्याव, पष्ठ – 129

4 वही, पष्ठ – 128

5 वही, पष्ठ – 128–129

6 अग्रवाल, पुरूषोत्तम, अंकथ कहानी प्रेम की कबीर की कविता और उनका समय दूसरा संस्करण 2010, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पष्ठ – 371

7 साध्वी ज्ञानानंद जी (टीका), कबीर साखी दर्पण (भाग–2), 2009, श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केन्द्र गिरिडीह (झारखंड) माखा खण्ड, पष्ठ – 117

8 वही, पष्ठ –119

9 वही, सती को अंग, पष्ठ – 14

10 वही, पष्ठ –14

11 वही, पतिव्रता को अंग, पष्ठ – 20

12 वही, पष्ठ – 30

13 पाठक डॉ. जितेन्द्र नाथ, मध्यकालीन हिंदी मुक्तक उद्भव और विकास भूमिका प्रकाशन नयी दिल्ली, 1991, पष्ठ – 278

14 डॉ. हरिमोहन, प्राचीन कवि (मूल्यांकन के विविध आयाम), 1981–82, अभिनव प्रकाशन आगरा, पष्ठ – 62

15 वही, पष्ठ – 62

16 वही, पष्ठ – 63

17 वही, पष्ठ – 63

18 वही, पष्ठ – 65

19 साध्वी ज्ञानानंद जी (टीकाकार) कबीर साखी दर्पण, भाग – 1 2009, श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केन्द्र गिरिडीह (झारखंड), कनक कामिनी को अंग, पष्ठ – 143

20 वही, पष्ठ – 144

21 टोकी, डॉ. राजेन्द्र (सं.), कबीर : दर्षष्टि – प्रतिदर्षष्टि, 2012, विमला बुक्स, दिल्ली, पष्ठ – 131

22 वही, पष्ठ – 132

23 वही, पष्ठ – 133

24 वही, पष्ठ – 134

25 वही, पष्ठ – 147

26 साध्वी ज्ञानानंद जी (टीकाकार) कबीर साखी दर्पण भाग –1, 2009 श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केन्द्र गिरिडीह (झारखंड), बिरह को अंग, पष्ठ – 257

27 वही, पष्ठ –258

28 वही, पष्ठ – 259

29 द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद, कबीर सत्रहवी आवर्षत्ति 2013, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पष्ठ – 158

30 वही, पष्ठ – 151

31 वही, पष्ठ – 254

32 साध्वी ज्ञानानंद जी (टीकाकार) कबीर साखी दर्पण भाग – 1, 2009, श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केन्द्र, गिरिडीह (झारखंड), प्रेम को अंग, पष्ठ – 241

33 वही, पष्ठ – 244

34 वही, पष्ठ – 242

35 वही, पीव परिचय को अंग, पष्ठ – 213

36 साध्वी ज्ञानानंद जी (टीकाकार), कबीर साखी दर्पण भाग – 2, 2009, श्री कबीर ज्ञान प्रकाशन केन्द्र गिरिडीह (झारखंड) काम को अंग, पष्ठ – 358

37 वही, पष्ठ – 360

38 वही, पतिव्रता को अंग, पष्ठ – 25

39 प्रमिला के. पी. , स्त्रीः यौनिकता बनाम आध्यात्मिकता, 2010, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पष्ठ – 49

40 अग्रवाल, पुरूषोत्तम, अकथ कहानी प्रेम की कबीर की कविता और उनका समय दूसरा संस्करण 2010 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पष्ठ – 380